अमरीकी सैनिक ने बदतमीज़ी क्यों की?

पिछले माह अमरीकी सैनिक रॉबर्ट बेल्स ने 16 अफगानी नागरिकों की हत्या कर दी थी। कहते हैं कि उसने ऐसा क्यों किया, यह एक रहस्य है। मगर इस घटना ने एक विचित्र बहस को जन्म दिया है। अमरीकी फौज द्वारा उपयोग की जाने वाली एक मलेरिया-रोधी दवा को लेकर विवाद शुरू हो गया है। कहा जा रहा है कि यह दवा मनोवैज्ञानिक साइड प्रभाव पैदा करती है।

न्यू साइंटिस्ट पत्रिका के ताज़ा अंक में रिपोर्ट किया गया है कि उक्त नरसंहार के तीन दिन बाद 20 मार्च के दिन यूएस फौज ने इस बात की समीक्षा तेज़ कर दी है कि क्या मेफ्लोक्विन नामक इस दवा का सही ढंग से उपयोग किया जा रहा है। मेफ्लोक्विन दवा लेरिएम के नाम से बाज़ार में उपलब्ध है और इसका उपयोग क्लोरोक्विन जैसी दवाइयों के प्रतिरोधी मलेरिया के इलाज में किया जाता है।

परीक्षणों के दौरान पता चला था कि मेफ्लोक्विन कम से कम एक-तिहाई मामलों में मनोचिकित्सकीय लक्षण पैदा करती है। इन लक्षणों में डिप्रेशन व सायकोसिस शामिल हैं। 2009 में जारी एक मेमो के मुताबिक यूएस फौज ने निर्देश दिए थे कि जहां भी संभव हो किसी अन्य वैकल्पिक दवा का उपयोग किया जाए। मेमो में यह भी निर्देश था कि जो सैनिक इस दवा को लेते हुए दुश्चिंता, अवसाद या भ्रम के शिकार हों, वे इसे लेना बंद कर दें। इसके अलावा मेफ्लोक्विन उन सैनिकों के लिए भी प्रतिबंधित कर दी गई थी जिन्हें मस्तिष्क क्षति हुई थी।

वैसे अभी यह पता नहीं है कि रॉबर्ट बेल्स मेफ्लोक्विन ले रहा था या नहीं। लगता है कि यूएस फौज उक्त घटना को मेफ्लोक्विन के मत्थे मढ़ने की तैयारी कर रही है। इस घटना से एक बात और स्पष्ट होती है - मेफ्लोक्विन नामक यह दवाई बाज़ार में उपलब्ध है। सवाल उठता है कि क्या इस दवा के साइड प्रभावों में मनोचिकित्सकीय साइड प्रभावों का ज़िक्र किया जाता है और क्या हमारे डॉक्टर्स दवा लिखते समय इस बात का ध्यान रखते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***